

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली
59तमी अखिलभारतीया शास्त्रीया स्पर्धा (2021-22)
नियमावलिः

I. भाषणस्पर्धा

क्र.सं.	स्पर्धायाः नाम स्पर्धालुना अध्येतव्यः ग्रन्थश्च	भागग्रहणाय अर्हता/स्पर्धाविवरणम्	पुरस्कारः
1.	व्याकरणभाषणम् भूषणसारे निपातार्थः	राज्यस्तरीयस्पर्धायां चिताः, संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/	स्वर्णपदकम् +10000/- रूप्यकाणि च।
2.	साहित्यभाषणम् रसगङ्गाधरे उपमाननिरूपणात् प्राग् द्वितीयाननम्	पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम् अथवा शास्त्रिकक्षायाः तृतीयवर्षे/ तत्समकक्षायाः अन्तिमवर्षे	रजतपदकम् +7000/- रूप्यकाणि च।
3.	न्यायभाषणम् दिनकरीये शब्दखण्डः	कस्मिंश्चिदपि शास्त्रे अधीयानाः छात्राः भागग्रहणाय अर्हाः।	कांस्यपदकम् +5000/- रूप्यकाणि च।
4.	साङ्ख्य-योगभाषणम् योगभाष्यस्य द्वितीयपादः	प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणं प्रत्येकं विषये (शास्त्रे) भाषणस्पर्धायाम् एकः एव स्पर्धालुः भागं ग्रहीतुमर्हति। एकःस्पर्धालुः भाषणेषु एकस्मिन् विषये एव भागं ग्रहीतुमर्हति अर्थात् एकः स्पर्धालुः शास्त्रद्वये भाषणस्पर्धायां भागग्रहणाय नानुमन्यते।	
5.	मीमांसाभाषणम् भाट्टदीपिकायाः सामान्यातिदेशः	शलाकापरीक्षासु/कण्ठपाठस्पर्धासु/शास्त्रार्थविचारे वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागग्रहणं नार्हति। भाषणार्थं निर्दिष्टं (वामतः स्तम्भे निर्दिष्टः) तत्तच्छास्त्रसम्बद्धं ग्रन्थं सम्यगधीत्य स्पर्धालुः उपस्थितः भवेत्। स्पर्धारम्भात् एकघण्टापूर्वं तेभ्यः ग्रन्थेभ्यः प्रतिशास्त्रं कश्चन विषय-विशेषः भाषणीयविषयस्य शीर्षकत्वेन उद्घोष्यते।	
6.	वेदान्तभाषणम् ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्ये तृतीयाध्ययास्य तृतीयचतुर्थपादौ		
7.	धर्मशास्त्रभाषणम् याज्ञवल्क्यस्मृतौ तृतीयाध्यायः		
8.	ज्यौतिषभाषणम् मुहूर्तचिन्तामणौ आदितः विवाहप्रकरणपर्यन्तम्		
9.	जैन-बौद्धदर्शनभाषणम् न्यायबिन्दुः, प्रथमाद्वितीयपरिच्छेदौ		
10.	वेदभाष्यभाषणम् निरुक्तस्य तृतीयाध्यायः	भाषणाय षट्-निमेषात्मकः (5+1) कालः दीयते। (पञ्चनिमेषाणामन्ते सूचना दीयते। तदनन्तरम् एकनिमेषाभ्यन्तरे भाषणम् उपसंहरणीयम्।) भाषणानन्तरं निर्णायिकाः प्रश्नान् पृच्छेयुः।	

II. शलाकापरीक्षा

क्र.सं.	स्पर्धायाः नाम स्पर्धालुना अध्येतव्यः ग्रन्थश्च	भागग्रहणाय अर्हता/स्पर्धाविवरणम्	पुरस्कारः
11.	साहित्यशलाकापरीक्षा साहित्यदर्पणे 4,5,6 परिच्छेदाः	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृत शिक्षणसंस्थासु शास्त्रिकक्षायां /तत्समकक्षायाम्/आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रत्येकं शास्त्रे शलाकापरीक्षायाम् एकस्मात् राज्यात् (प्रतिस्पर्धालुगणम्) एकस्यैव अवसरः। ● एकस्य छात्रस्य एकस्मिन् शास्त्रे एव शलाकास्पर्धायाम् अवसरः कल्प्यते। ● भाषणस्पर्धायां कण्ठपाठस्पर्धायां/शास्त्रार्थ - विचारे वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागग्रहणं नार्हति। 	उत्तीर्णेषु प्रथम/द्वितीय/तृतीय स्थानभाजां कृते पुरस्कारः-
12.	व्याकरणशलाकापरीक्षा परिभाषेन्दुशेखरे असिद्धपरिभाषतः आन्तं यावत्		● स्वर्णपदकम् + स्वर्णशलाका + 10000/- रूप्यकाणि च।
13.	न्यायशलाकापरीक्षा न्यायभाष्ये द्वितीयाध्यायः		● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च।
14.	ज्यौतिषशलाकापरीक्षा सिद्धान्तशिरोमणौ आदितः त्रिप्रश्नाधिकारं यावत्		● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च।
15.	वेदान्तशलाकापरीक्षा गीताभाष्ये तृतीयषट्कम्		सर्वेभ्यः उत्तीर्णेभ्यः प्रमाणपत्राणि। उत्तीर्णतामानदण्डः/ श्रेणीनिर्धारणम् इत्थम्-
16.	पुराणेतिहासशलाकापरीक्षा भागवते द्वितीयस्कन्धः		● 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/-
17.	मीमांसाशलाकापरीक्षा शाबरभाष्ये द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ		● 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-
		● 60% तदुपरि च 64% पर्यन्तम् उत्तीर्णताप्रमाणपत्रमात्रम्।	

III.

<p>18.</p>	<p>शास्त्रार्थविचारः लक्षणाविचारः</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षण-संस्थासु शास्त्रिकक्षायां/आचार्यकक्षायां/विद्यावारिधिकक्षायां/तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रत्येकं राज्यात् राज्यस्तरे चितौ द्वौ एव छात्रौ अस्यां स्पर्धायां भागं ग्रहीतुमर्हतः। ● अत्र वामतः स्तम्भे निर्दिष्ट-स्थूलविषये स्पर्धार्थिनः सम्यक् अध्ययनं कुर्युः। तदन्तर्गतं स्वाभीष्टशास्त्रांशगतं शीर्षकं निश्चित्य सूक्ष्मतया अनुसन्धानं कुर्युः। स्ववक्तव्यविषयस्य शास्त्रान्तरेण सम्बन्धं/साम्यं/भेदं पूर्वपक्षं, सिद्धान्तं च सम्यगवगच्छेयुः। तद्विषये परिचर्चार्थं सिद्धतां कुर्युः। ● शास्त्रार्थस्पर्धा शास्त्रार्थसभावत् आयोज्यते यत्र सर्वे स्पर्धिनः वेदिकायां सहैव उपविशेयुः। ● प्रत्येकं स्पर्धालुः प्रदत्तविषयाधारेण स्वाभीष्टशास्त्रानुसारं स्वयं निश्चित-शीर्षकानुसारेण 12 निमेषात्मके काले विषयं प्रतिपादयेत्। एकस्य स्पर्धिनः वक्तव्यपरिसमाप्तौ अन्ये स्पर्धिनः निर्णायकानुमतिं प्राप्य प्रश्नान् कुर्युः। 	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। ● 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/-
------------	--------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

IV. कण्ठपाठस्पर्धा

<p>19.</p>	<p>काव्यकण्ठपाठः माघकाव्ये पञ्चमसर्गात् अष्टमसर्गपर्यन्तम्</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणम् एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकं सर्गस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः 	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। ● 80% अङ्का, तदुपरि च
------------	-------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

		उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः।	विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/- ● 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-
20.	अमरकोषकण्ठपाठः संपूर्णः अमरकोषः	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणम् एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकं काण्डस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः। 	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। ● 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/- ● 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-
21.	अष्टाध्यायीकण्ठपाठः सम्पूर्णा अष्टाध्यायी	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणम् एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) 	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। ● 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/-

		<p>स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते।</p> <ul style="list-style-type: none"> निर्णायिका: निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकम् अध्याये विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायिकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना सूत्राणि श्रावणीयानि। 	<ul style="list-style-type: none"> 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-
22.	<p>धातुरूपकण्ठपाठः निर्दिष्टानां 100 धातूनां दशसु लकारेषु सर्वाणि कर्तरि, कर्मणि/भावे रूपाणि लटि ण्यन्त-सन्नन्तरूपाणि च।</p>	<ul style="list-style-type: none"> संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणम् एकस्य एव अवसरः। भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। निर्णायकैः पृष्ठानां स्पर्धार्थं निर्दिष्टधातूनां निर्दिष्टलकारेषु रूपाणि स्पर्धालुना वक्तव्यानि। 	<ul style="list-style-type: none"> स्वर्णपदकम् + 10000/- रूपाकाणि च। रजतपदकम् + 7000/- रूपाकाणि च। कांस्यपदकम् + 5000/- रूपाकाणि च। 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/- 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-
	<p>धातुरूपकण्ठपाठनिमित्तं निर्दिष्टाः धातवः</p> <ul style="list-style-type: none"> भ्वादिगणे 1. भू-सत्तायाम्, 2. हसे-हसने, 3. पठ-व्यक्तायां वाचि, 4. रक्ष-पालने, 5. वद-व्यक्तायां वाचि, 6. गम्लु-गतौ, 7. दृशिर्-प्रेक्षणे, 8. पा-पाने, 9. ष्टा-गतिनिवृत्तौ, 10. घ्रा-गन्धोपादाने, 11. षद्लु-विशरणगत्यवसादनेषु, 12. डुपचष्-पाके, 13. णम-प्रहृत्वे शब्दे च, 14. स्मृ-आध्याने, 15. जि-जये, 16. श्रु-श्रवणे, 17. कृष-विलेखने, 18. वस-निवासे, 19. त्यज-हानौ, 20. षेवृ-सेवने, 21. डुलभष्-प्राप्तौ, 22. वृधु-वृद्धौ, 23. मुद-हर्षे, 24. षह-मर्षणे, 25. वृतु-वर्तने, 26. ईक्ष-दर्शने, 27. णीञ्-प्रापणे, 28. हृञ्-हरणे, 29. टुयाचृ-याञ्चायाम्, 30. वह-प्रापणे। अदादिगणे 31. अद-भक्षणे, 32. अस-भुवि, 33. इण्-गतौ, 34. रुदिर्-अश्रुविमोचने, 35. जिष्विप्-शये, 36. दुह-प्रपूरणे, 37. लिह्-आस्वादाने, 38. हन-हिंसागत्योः, 39. ष्टुञ्-स्तुतौ, 40. या-प्रापणे, 41. पा-रक्षणे, 42. शासु-अनुशिष्टौ, 43. विद-ज्ञाने, 44. आस-उपवेशने, 45. शीङ्-स्वप्ने, 46. इङ्-अध्ययने, 47. ब्रूञ्-व्यक्तायां वाचि। जुहोत्यादिगणे 48. हु-दानादानयोः, 49. जिभी-भये, 50. ह्री-लज्जायाम्, 51. डुभृञ्-धारणपोषणयोः, 		

	<p>52. ओहाक्-त्यागे, 53. माङ्-माने शब्दे च, 54. डुदाञ्-दाने, 55. डुदाञ्-धारणपोषणयोः।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● दिवादिगणे 56. दिवु-क्रीडा..कान्तिगतिषु, 57. नृती-गातृविक्षेपे, 58. णश-अदर्शने, 59. भ्रमु-अनवस्थाने, 60. श्रमु-तपसि खेदे च, 61. षिवु-तन्तुसन्ताने, 62. षूङ्-प्राणिप्रसवे, 63. शो-तनूकरणे, 64. पद-गतौ, 65. कुप-क्रोधे, 66. युध-संप्रहारे, 67. जनी-प्रादुर्भावे। ● स्वादिगणे 68. चिञ्-चयने, 69. आप्लु-व्याप्तौ, 70. शकलु-शक्तौ, 71. अशू-व्याप्तौ संघाते च, 72. षुञ्-अभिषवे। ● तुदादिगणे 73. तुद-व्यथने, 74. इष-इच्छायाम्, 75. लिख-अक्षरविन्यासे, 76. प्रच्छ-ज्ञीप्सायाम्, 77. स्पृश-संस्पर्शने, 78. कृ-विक्षेपे, 79. गृ-निगरणे, 80. क्षिप-प्रेरणे, 81. मृङ्-प्राणत्यागे, 82. मुञ्चु-मोक्षणे। ● रुधादिगणे 83. रुधिर्-आवरणे, 84. भिदिर्-विदारणे, 85. छिदिर्-द्वैधीकरणे, 86. हिसि-हिंसायाम्, 87. युजिर्-योगे, 88. भञ्जो-आमर्दने, 89. भुज-पालनाभ्यवहारयोः। ● तनादिगणे 90. तनु-विस्तारे, 91. डुकृञ्-करणे। ● त्रयादिगणे 92. डुक्रीञ्-द्रव्यविनिमये, 93. ज्ञा-अवबोधने, 94. बन्ध-बन्धने, 95. मन्थ-विलोडने, 96. ग्रह-उपादाने। ● चुरादिगणे 97. चुर-स्तेये, 98. चिति-स्मृत्याम्, 99. भक्ष-अदने, 100. कथ-वाक्यप्रबन्धे
23.	<p>भगवद्गीताकण्ठपाठः सम्पूर्णम्</p> <ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● प्रतिराज्यं/प्रति-स्पर्धालुगणम् एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकम् अध्यायस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। <ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। ● 80% अङ्का, तदुपरि च विशिष्टश्रेणी+ रु. 2000/- ● 65% अङ्का, तदुपरि च प्रथमश्रेणी+ रु. 1500/-

24.	समस्यापूर्ति:	<ul style="list-style-type: none"> ● समस्यापूर्तौ, अक्षरश्लोकीस्पर्धायां च तदर्थमेव चितौ द्वौ (समस्यापूर्तौ एकः, अक्षरश्लोक्यामेकः) भागं ग्रहीतुमर्हतः। उपर्युक्तासु स्पर्धासु यादृशस्तरीयाः अर्हाः तत्तत्स्तरीयाः अत्रापि अर्हाः। तावुभौ अतिरिच्य प्रत्येकं राज्यात् आगतस्पर्धालुगणस्य अन्ये सर्वे सदस्याः अपि भागं ग्रहीतुमर्हन्ति। अर्थात् भाषणस्पर्धायां/अष्टाध्यायी-कण्ठपाठे/काव्यकण्ठपाठे/अमरकोषकण्ठपाठे धातुरूपकण्ठपाठे/शास्त्रार्थविचारे वा ये भागं गृह्णन्ति ते अपि समस्यापूर्तौ अक्षरश्लोक्यां च भागं ग्रहीतुमर्हन्ति। ● समस्यापूर्तिनिमित्तं समस्यात्रयं स्पर्धास्थाने उद्घोष्यते। एकघण्टाकाले प्रत्येकं स्पर्धार्थिना न्यूनातिन्यूनं समस्याद्वयं पूरणीयम् (दत्तपङ्क्तिमुपयुज्य श्लोकरचना कर्तव्या) ● अक्षरश्लोक्याम् अधोनिर्दिष्टग्रन्थेभ्यः एव श्लोकाः स्वीकरणीयाः 1. स्वप्नवासवदत्तम्, 2. रघुवंशम्, 3. कुमारसम्भवम्, 4. बुद्धचरितम् (अश्वघोषस्य) 5. सौन्दरानन्दम् (अश्वघोषस्य) 6. किरातार्जुनीयम्, 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 8. विक्रमोर्वशीयम्, 9. मालविकाग्निमित्रम्, 10. मेघदूतम्, 11. नैषधीयम्, 12. उत्तररामचरितम्, 13. शिशुपालवधम्, 14. मृच्छकटिकम्, 15. मुद्राराक्षसम्, 16. भर्तृहरेः सुभाषितत्रिशती, 17. गङ्गाधरशास्त्रप्रणीतः अलिविलासिसंलापः, 18. श्रीशङ्करभगवत्पादविरचिता सौन्दर्यलहरी, 19. शिवमहिम्नस्तोत्रम्, 20. महिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम्, 21. पण्डितराजजगन्नाथस्य पञ्च लहर्यः गङ्गालहरी (पीयूषलहरी), अमृतलहरी, करुणालहरी (विष्णुलहरी), लक्ष्मीलहरी, सुधालहरी, 22. पण्डितराज-जगन्नाथविरचित-भामिनीविलासः, 23. शिवशतकम् एतेभ्यः ग्रन्थेभ्यः सर्वे श्लोकाः स्वीकर्तुं शक्यन्ते। 	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च।
25.	अक्षरश्लोकी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् + 10000/- रूप्यकाणि च। ● रजतपदकम् + 7000/- रूप्यकाणि च। ● कांस्यपदकम् + 5000/- रूप्यकाणि च। 	

		<ul style="list-style-type: none"> ● पूर्ववर्तिना स्पर्धालुना पठितस्य श्लोकस्य तृतीयपादगतं प्रथमाक्षरं गृहीत्वा स्वस्वपर्याये स्पर्धालुः श्लोकं पठेत्। यथा- 'कश्चित् कान्ता.....' इति मेघदूतश्लोके पठिते सति क्रमागतपर्यायः स्पर्धी यकारेणारभ्यमाणं श्लोकं पठेत्। ● स्पर्धा परिसमापयितुम् उपलब्धसमयं, स्पर्धायाः गतिं च वीक्ष्य स्पर्धारम्भानन्तरं क्रमेण नियमाः निर्णायकैः परिशोधयिष्यन्ते। ● कस्मिंश्चिद्वर्षे राष्ट्रस्तरीययाम् अक्षरश्लोक्यां स्वर्णपदकेन पुरस्कृतःपुनः अस्याम् अक्षरश्लोक्यां भागग्रहणाय नानुमन्यते। 	
26.	शास्त्रीयस्फूर्तिस्पर्धा	<p>संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षण-संस्थासु शास्त्रिकक्षायां/आचार्यकक्षायां/विद्यावारिधि कक्षायां/तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।)</p> <p>शास्त्रीयस्फूर्तिस्पर्धायां (QUIZ) प्रतिराज्यं द्वयोः एकः गणः भागं ग्रहीतुमर्हति। एतद्गणसदस्यौ इतरस्पर्धासु भागग्रहीतारौ, एतदर्थमेव चितौ वा भवितुमर्हतः। केवलसंस्कृतसाहित्यसंबद्धाः विषयाः भवन्ति। वेदाः उपनिषदः, पुराणानि, शास्त्राणि, काव्यानि, इत्यादीनि</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● स्वर्णपदकम् ● रजतपदकम् ● कांस्यपदकम्
<p>विजयवैजयन्ती</p> <p>विभिन्नस्पर्धासु स्पर्धालूनां पुरस्कारोपलब्धेः आधारेण अत्यधिकाङ्गभाजे स्पर्धालुगणाय विजयवैजयन्ती प्रदास्यते।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● उपर्युक्तासु स्पर्धासु प्रत्येकं स्पर्धायां निर्णयकाले प्रथम-द्वितीय-तृतीयस्थानेषु प्रत्येकं स्थाने यदि द्वयोः स्पर्धाल्वोः बहूनां वा समाङ्काः आयान्ति तर्हि तयोः स्पर्धाल्वोः/तेषां स्पर्धालूनां समाङ्कभञ्जनाय पुनः स्पर्धा (आशुस्पर्धा) आयोज्येत। <p style="text-align: center;">अखिलभारतीय (राष्ट्रस्तरीय)-स्पर्धासु भागग्रहणाय प्रक्रिया</p> <p>➤ राज्यस्तरीयस्पर्धासु चिताः, नियमावल्यां दर्शितरीत्या अर्हतावन्तः अखिलभारतीयायां (राष्ट्रस्तरीयायां) स्पर्धायां भागं ग्रहीष्यन्ति। अर्थात् राज्यस्तरीयस्पर्धायोजनसमित्या राष्ट्रस्तरीयस्पर्धानिमित्तं चितः अर्हस्पर्धिगणः एव राष्ट्रस्तरीय (अखिलभारतस्तरीय)-स्पर्धायाम् उपस्थितः भवेत्। तद्विहाय काचिदपि संस्था / किमपि गुरुकुलम् साक्षादेव स्वीयं छात्रम् अखिलभारतीय-स्पर्धां प्रति प्रेषयितुम् न अर्हति। अतः नियमावल्यां निर्दिष्टासु स्पर्धासु भागग्रहणचिकीर्षवः/स्पर्धार्थिनः आदौ राज्यस्तरीयस्पर्धार्थं स्वस्वसंस्थामाध्यमेन स्वगुरुकुलमाध्यमेन/गुरोः माध्यमेन वा निर्दिष्टप्रपत्रं प्रपूर्य राज्यस्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थायै सम्प्रेष्य नामाङ्कनं कुर्युः। राज्यस्तरीय/ स्पर्धायोजकाः भागग्रहणार्थमावेदयितुं प्रपत्राणि- इत्यादिविषये विवरणम् अग्रिमपृष्ठेषु दृष्टव्यम्।</p>			

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, देहली
शलाकापरीक्षा-विधानम्

स्पर्धालोः (अध्येतुः) कर्तव्यम्-

शलाकास्पर्धायां भागग्रहणचिकीर्षुणा स्पर्धालुना निर्दिष्टशास्त्रस्य निर्दिष्ट-ग्रन्थभागस्य समग्रतया (न तु अंशतः) अध्ययनं कार्यम्। स्पर्धालुः (अध्येता) ग्रन्थस्य निर्दिष्टभागस्य सर्वाः पङ्क्तीः कण्ठस्थीकुर्यात्, ग्रन्थपङ्क्तीनां विशदं व्याख्यानं कर्तुं सामर्थ्यं सम्पादयेत्, निर्दिष्टे ग्रन्थभागे विद्यमानविषयेषु गहनशास्त्रचर्चा कर्तुमपि कौशलं सम्पादयेत्। एतदध्यन्तरे, सूचितरीत्या राज्यस्तरीयस्पर्धार्थं नामाङ्कनमपि समये कारणीयम् इति न विस्मरेत्।

परीक्षाविधानम्-

अखिलभारतीयायां, राज्यस्तरीयायां च शलाकापरीक्षायां निर्दिष्टग्रन्थम् अधीतवतः प्रत्येकं स्पर्धालोः परीक्षणं त्रिधा क्रियते-

1. स्मृतिबल/धारणाशक्ति-परीक्षणम्
2. ग्रन्थपङ्क्तेः व्याख्यानसामर्थ्यपरीक्षणम्
3. विशिष्टज्ञानपरीक्षणम्/शास्त्रचर्चा/गाढपरीक्षणम्

1. प्रथमः घट्टः (स्मृतिबल/धारणाशक्ति-परीक्षणम्)

परीक्षकैः शलाकया उद्धृतात् स्थानात् एका ग्रन्थपङ्क्तिः उच्चार्यते। ततः आरभ्य छात्रेण अग्रिमपङ्क्तयः श्रावणीयाः (परीक्षकाः यावत् श्रोतुमिच्छन्ति तावत्पर्यन्तम्) परीक्षकेषु एकैकः अपि एकस्य छात्रस्य एतादृशपरीक्षणम् अन्यूनं त्रिवारं कुर्यात्। स्वस्पर्धासंख्याम्, समयं च अनुसृत्य परीक्षकाः ततोऽधिकप्रश्नान् अपि कर्तुमर्हन्ति। प्रतिवारमपि परीक्षकैः शलाकया एव प्रश्नस्थानानि उद्घाटनीयानि।

2. द्वितीयः घट्टः (व्याख्यानसामर्थ्यपरीक्षणम्)

परीक्षकैः शलाकया उद्घाटितस्थानात् ग्रन्थपङ्क्तिरेका उच्चार्यते। तस्याः पङ्क्तेः विशदं व्याख्यानं छात्रः कुर्यात्। छात्रस्य एतादृशं परीक्षणं एकैकः अपि परीक्षकः अन्यूनं त्रिवारं कुर्यात्। परीक्षकैः प्रतिवारं शलाकया प्रश्नस्थानानि चेतव्यानि।

3. तृतीयः घट्टः (विशेषावगतिपरीक्षणम्/गाढज्ञानपरीक्षणम्)

परीक्षकाः निर्धारितग्रन्थभागे विद्यमाने विषये गहनप्रश्नान् कुर्युः। छात्रेण सह शास्त्रचर्चा कुर्युः। छात्रेण प्रदत्तसमाधानमनुसृत्य उपप्रश्नान् अपि परीक्षकाः कर्तुमर्हन्ति येन छात्रस्य ग्रन्थावगतेः स्तरः निर्णीतः भवेत्। एकवारं कृत-प्रश्नोपप्रश्न-शास्त्रचर्चादीनां समाधानात् परं पुनः द्वितीयवारम् एवमेव प्रश्नोपप्रश्नचर्चादिकं भवेत्। अनया रीत्या तृतीयवारं, चतुर्थवारं/पञ्चमवारं च परीक्षकाः प्रश्नान् कुर्युः।

त्रिष्वपि घट्टेषु स्पर्धालुना स्वीयं सामर्थ्यं प्रदर्शनीयम्। अन्यथा भागग्रहणम् अपूर्णं भवेत्। परीक्षायाम् उत्तीर्णानाम् एव पुरस्काराय प्रथम/द्वितीय/तृतीय-स्थाननिश्चयः क्रियते।

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली
राज्यस्तरीया शास्त्रीया स्पर्धा

2021-2022

नियमावलिः

I. भाषणस्पर्धा

क्र.सं.	स्पर्धायाः नाम स्पर्धालुना अध्येतव्यः ग्रन्थश्च	भागग्रहणाय अर्हता/स्पर्धाविवरणम्	पुरस्कारः
1	व्याकरणभाषणम् भूषणसारे निपातार्थः	संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/ पारम्परिकसंस्कृत शिक्षणसंस्थासु आचार्यकक्षायां/	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय- स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान- भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु- रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि- रूपेण वा पुरस्काराः राज्य- स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।
2	साहित्यभाषणम् रसगङ्गाधरे उपमाननिरूपणात् प्राग् द्वितीयाननम्	तत्समकक्षायाम् अथवा शास्त्रिकक्षयाः तृतीयवर्षे/ तत्समकक्षयाः अन्तिमवर्षे कस्मिंश्चिदपि शास्त्रे अधीयानाः छात्राः	
3	न्यायभाषणम् दिनकरीये शब्दखण्डः	भागग्रहणाय अर्हाः। प्रत्येकं विषये (शास्त्रे) भाषणस्पर्धायाम् एकः	
4	साङ्ख्य-योगभाषणम् योगभाष्यस्य द्वितीयपादः	एव स्पर्धालुः भागं ग्रहीतुमर्हति। एकःस्पर्धालुः भाषणेषु एकस्मिन् विषये एव भागं	
5	मीमांसाभाषणम् भाट्टदीपिकायाः सामान्यातिदेशः	ग्रहीतुमर्हति अर्थात् एकः स्पर्धालुः शास्त्रद्वये भाषणस्पर्धायां भागग्रहणाय नानुमन्यते।	
6	वेदान्तभाषणम् ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्ये तृतीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ	शलाकापरीक्षासु/कण्ठपाठस्पर्धासु/शास्त्रार्थविचारे वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागग्रहणं नार्हति।	
7	धर्मशास्त्रभाषणम् याज्ञवल्क्यस्मृतौ तृतीयाध्यायः	भाषणार्थं निर्दिष्टं (वामतः स्तम्भे निर्दिष्टः) तत्तच्छास्त्रसम्बद्धं ग्रन्थं सम्यगधीत्य स्पर्धालुः	
8	ज्यौतिषभाषणम् मुहूर्तचिन्तामणौ आदितः विवाहप्रकरणपर्यन्तम्	उपस्थितः भवेत्। स्पर्धारम्भात् एकघण्टापूव तेभ्यः ग्रन्थेभ्यः प्रतिशास्त्रं कश्चन विषय-विशेषः भाषणीयविषयस्य शीर्षकत्वेन उद्घोष्यते।	
9	जैन-बौद्धदर्शनभाषणम् न्यायबिन्दुः, प्रथमाद्वितीयपरिच्छेदौ	भाषणाय षट्-निमेषात्मकः (5+1) कालः दीयते। (पञ्चनिमेषाणामन्ते सूचना दीयते। तदनन्तरम् एकनिमेषाभ्यन्तरे भाषणम् उपसंहरणीयम्।)	
10	वेदभाष्यभाषणम् निरुक्तस्य तृतीयाध्यायः	भाषणानन्तरं निर्णायकाः प्रश्नान् पृच्छेयुः।	

II. शलाकापरीक्षा

क्र. सं.	स्पर्धायाः नाम स्पर्धालुना अध्येतव्यः ग्रन्थश्च	भागग्रहणाय अर्हता/स्पर्धाविवरणम्	पुरस्कारः
11	साहित्यशलाकापरीक्षा साहित्यदर्पणे 4,5,6 परिच्छेदाः	<ul style="list-style-type: none"> संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृत शिक्षणसंस्थासु शास्त्रिकक्षायां /तत्समकक्षायाम्/आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) प्रत्येकं शास्त्रे शलाकापरीक्षायाम् एकस्यैव अवसरः। एकस्य छात्रस्य एकस्मिन् शास्त्रे एव शलाकास्पर्धायाम् अवसरः कल्प्यते। भाषणस्पर्धायां कण्ठपाठस्पर्धायां/शास्त्रार्थ - विचारे वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागग्रहणं नार्हति। 	<ul style="list-style-type: none"> प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।
12	व्याकरणशलाकापरीक्षा परिभाषेन्दुशेखरे आदितः असिद्धपरिभाषतः आन्तं यावत्		
13	न्यायशलाकापरीक्षा न्यायभाष्ये द्वितीयाध्यायः		
14	ज्यौतिषशलाकापरीक्षा सिद्धान्तशिरोमणौ आदितः त्रिप्रश्नाधिकारं यावत्		
15	वेदान्तशलाकापरीक्षा गीताभाष्ये तृतीयषट्कम्		
16	पुराणेतिहासशलाकापरीक्षा भागवते द्वितीयस्कन्धः		
17	मीमांसाशलाकापरीक्षा शाबरभाष्ये द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ		

III.

18	शास्त्रार्थविचारः लक्षणाविचारः	<ul style="list-style-type: none"> संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृत शिक्षण-संस्थासु शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/विद्यावारिधि कक्षायां/तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) द्वौ एव छात्रौ अस्यां स्पर्धायां भागं ग्रहीतुमर्हतः। 	<ul style="list-style-type: none"> प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।
----	-----------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

		<ul style="list-style-type: none"> ● अत्र वामतः स्तम्भे निर्दिष्ट-स्थूलविषये स्पर्धार्थिनः सम्यक् अध्ययनं कुर्युः। तदन्तर्गतं स्वाभीष्टशास्त्रांशगतं शीर्षकं निश्चित्य सूक्ष्मतया अनुसन्धानं कुर्युः। स्ववक्तव्यविषयस्य शास्त्रान्तरेण सम्बन्धं/साम्यं/भेदं पूर्वपक्षं, सिद्धान्तं च सम्यगवगच्छेयुः। तद्विषये परिचर्चार्थं सिद्धतां कुर्युः। ● शास्त्रार्थस्पर्धा शास्त्रार्थसभावत् आयोज्यते यत्र सर्वे स्पर्धिनः वेदिकायां सहैव उपविशेयुः। ● प्रत्येकं स्पर्धालुः प्रदत्तविषयाधारेण स्वाभीष्टशास्त्रानुसारं स्वयं निश्चित-शीर्षकानुसारेण 12 निमेषात्मके काले विषयं प्रतिपादयेत्। एकस्य स्पर्धिनः वक्तव्यपरिसमाप्तौ अन्ये स्पर्धिनः निर्णायकानुमतिं प्राप्य प्रश्नान् कुर्युः। 	
--	--	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--

IV. कण्ठपाठस्पर्धा

19	<p>काव्यकण्ठपाठः माघकाव्ये पञ्चमसर्गात् अष्टमसर्गपर्यन्तम्</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृत शिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकं सर्गस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः। 	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराश्यानुसारेण प्रदीयन्ते।
----	-------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

20	<p>अमरकोषकण्ठपाठः संपूर्णः अमरकोषः</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकं काण्डस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः। 	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राप्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।
21	<p>अष्टाध्यायीकण्ठपाठः सम्पूर्णा अष्टाध्यायी</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृत शिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु 	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राप्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।

		<p>पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकम् अध्याये विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना सूत्राणि श्रावणीयानि। 	
22	<p>धातुरूपकण्ठपाठः निर्दिष्टानां 100 धातूनां दशसु लकारेषु सर्वाणि कर्तरि, कर्मणि/भावे रूपाणि लटि ण्यन्त-सन्नन्तरूपाणि च।</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) ● एकस्य एव अवसरः। ● भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। ● निर्णायकैः पृष्ठानां स्पर्धार्थं निर्दिष्टधातूनां निर्दिष्टलकारेषु रूपाणि स्पर्धालुना वक्तव्यानि। 	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।

धातुरूपकण्ठपाठनिमित्तं निर्दिष्टाः धातवः

- **भ्वादिगणे** 1. भू-सत्तायाम्, 2. हसे-हसने, 3. पठ-व्यक्तायां वाचि, 4. रक्ष-पालने, 5. वद-व्यक्तायां वाचि, 6. गम्ल्-गतौ, 7. दृशिर्-प्रेक्षणे, 8. पा-पाने, 9. ष्टा-गतिनिवृत्तौ, 10. घ्रा-गन्धोपादाने, 11. षद्ल्-विशरणगत्यवसादनेषु, 12. डुपचष्-पाके, 13. णम-प्रहृत्वे शब्दे च, 14. स्मृ-आध्याने, 15. जि-जये, 16. श्रु-श्रवणे, 17. कृष-विलेखने, 18. वस-निवासे, 19. त्यज-हानौ, 20. षेवृ-सेवने, 21. डुलभष्-प्राप्तौ, 22. वृधु-वृद्धौ, 23. मुद-हर्षे, 24. षह-मर्षणे, 25. वृतु-वर्तने, 26. ईक्ष-दर्शने, 27. णीञ्-प्रापणे, 28. हञ्-हरणे, 29. टुयाचृ-याञ्चायाम्, 30. वह-प्रापणे।
- **अदादिगणे** 31. अद-भक्षणे, 32. अस-भुवि, 33. इण्-गतौ, 34. रुदिर्-अश्रुविमोचने, 35. जिष्विप्-शये, 36. दुह-प्रपूरणे, 37. लिह्-आस्वादाने, 38. हन-हिंसागत्योः, 39. ष्टुञ्-स्तुतौ, 40. या-प्रापणे, 41. पा-रक्षणे, 42. शासु-अनुशिष्टौ, 43. विद-ज्ञाने, 44. आस-उपवेशने, 45. शीङ्-स्वप्ने, 46. इङ्-अध्ययने, 47. ब्रूञ्-व्यक्तायां वाचि।
- **जुहोत्यादिगणे** 48. हु-दानादानयोः, 49. जिभी-भये, 50. ह्री-लज्जायाम्, 51. डुभृञ्-धारणपोषणयोः, 52. ओहाक्-त्यागे, 53. माङ्-माने शब्दे च, 54. डुदाञ्-दाने, 55. डुदाञ्-धारणपोषणयोः।
- **दिवादिगणे** 56. दिवु-क्रीडा..कान्तिगतिषु, 57. नृती-गातृविक्षेपे, 58. णश-अदर्शने, 59. भ्रमु-अनवस्थाने, 60. श्रमु-तपसि खेदे च, 61. षिवु-तन्तुसन्ताने, 62. षूङ्-प्राणिप्रसवे, 63. शो-तनूकरणे, 64. पद-गतौ, 65. कुप-क्रोधे, 66. युध-संप्रहारे, 67. जनी-प्रादुर्भावे।
- **स्वादिगणे** 68. चिञ्-चयने, 69. आप्लृ-व्याप्तौ, 70. शकल्-शक्तौ, 71. अशू-व्याप्तौ संघाते च, 72. षुञ्-अभिषेवे।
- **तुदादिगणे** 73. तुद-व्यथने, 74. इष-इच्छायाम्, 75. लिख-अक्षरविन्यासे, 76. प्रच्छ-ज्ञीप्सायाम्, 77. स्पृश-संस्पर्शने, 78. कृ-विक्षेपे, 79. गृ-निगरणे, 80. क्षिप-प्रेरणे, 81. मृङ्-प्राणत्यागे, 82. मुच्लृ मोक्षणे।
- **रुधादिगणे** 83. रुधिर्-आवरणे, 84. भिदिर्-विदारणे, 85. छिदिर्-द्वैधीकरणे, 86. हिसि-हिंसायाम्, 87. युजिर्-योगे, 88. भञ्जो-आमर्दने, 89. भुज-पालनाभ्यवहारयोः।
- **तनादिगणे** 90. तनु-विस्तारे, 91. डुकृञ्-करणे।
- **ब्र्यादिगणे** 92. डुक्रीञ्-द्रव्यविनिमये, 93. ज्ञा-अवबोधने, 94. बन्ध-बन्धने, 95. मन्थ-विलोडने, 96. ग्रह-उपादाने।
- **चुरादिगणे** 97. चुर-स्तेये, 98. चिति-स्मृत्याम्, 99. भक्ष-अदने, 100. कथ-वाक्यप्रबन्धे

23

भगवद्गीताकण्ठपाठः
सम्पूर्णम्

- संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षणसंस्थासु पू. मध्यमा/उ. मध्यमा/ प्राक्शास्त्रिकक्षायां/ तत्समकक्षायाम्/ गुरुकुले अधीयानाः छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 18 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।)
- एकस्य एव अवसरः।
- भाषणस्पर्धायां/शलाकापरीक्षायाम्/शास्त्रार्थ

- प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते।
- प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि।
- प्रमाणपत्राप्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः

		<p>-विचारे अन्यकण्ठपाठस्पर्धासु वा यः भागं गृह्णाति सः अत्र भागं ग्रहीतुं नार्हति।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● निर्णायकाः निर्दिष्टग्रन्थभागे प्रत्येकम् अध्यायस्य विभिन्नस्थानेषु स्पर्धालोः परीक्षणं कुर्युः। निर्णायकैः उद्धृतात् स्थानात्, यावत् पर्यन्तं निर्णायकाः श्रोतुमिच्छन्ति तावत् पर्यन्तं स्पर्धालुना श्लोकाः श्रावणीयाः। ● अस्यां स्पर्धायां सकृत् (कस्मिंश्चित् वर्षे) स्वर्णपदकेन पुरस्कृतः अनन्तरवर्षेषु पुनः अस्यां स्पर्धायां भागग्रहणाय न अनुमन्यते। 	<p>उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।</p>
24	समस्यापूर्तिः	<ul style="list-style-type: none"> ● समस्यापूर्तौ, अक्षरश्लोकीस्पर्धायां च तदर्थमेव चितौ द्वौ (समस्यापूर्तौ एकः, अक्षरश्लोक्यामेकः) भागं ग्रहीतुमर्हतः। उपर्युक्तासु स्पर्धासु यादृशस्तरीयाः अर्हाः तत्तत्स्तरीयाः अत्रापि अर्हाः। तावुभौ अतिरिच्य प्रत्येकं राज्यात् आगतस्पर्धालुगणस्य अन्ये सर्वे सदस्याः अपि भागं ग्रहीतुमर्हन्ति। अर्थात् भाषणस्पर्धायां/अष्टाध्यायी-कण्ठपाठे/काठयकण्ठपाठे/ अमरकोषकण्ठपाठे धातुरूपकण्ठपाठे/शास्त्रार्थविचारे वा ये भागं गृह्णन्ति ते अपि समस्यपूर्तौ अक्षरश्लोक्यां च भागं ग्रहीतुमर्हन्ति। ● समस्यापूर्तिनिमित्तं समस्यात्रयं स्पर्धास्थाने उद्घोष्यते। एकघण्टाकाले प्रत्येकं स्पर्धार्थिना न्यूनातिन्यूनं समस्याद्वयं पूरणीयम् (दत्तपङ्क्तिमुपयुज्य श्लोकरचना कर्तव्या) ● अक्षरश्लोक्याम् अधोनिर्दिष्टग्रन्थेभ्यः एव श्लोकाः स्वीकरणीयाः 1. स्वप्नवासवदत्तम्, 2. रघुवंशम्, 3. कुमारसम्भवम्, 4. बुद्धचरितम् (अश्वघोषस्य) 5. सौन्दरानन्दम् 	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते।
25	अक्षरश्लोकी	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराशयनुसारेण प्रदीयन्ते। 	

		<p>(अश्वघोषस्य) 6. किरातार्जुनीयम्, 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 8. विक्रमोर्वशीयम्, 9. मालविकाग्निमित्रम्, 10. मेघदूतम्, 11. नैषधीयम्, 12. उत्तररामचरितम्, 13. शिशुपालवधम्, 14. मृच्छकटिकम्, 15. मुद्राराक्षसम्, 16. भर्तृहरेः सुभाषितत्रिशती, 17. गङ्गाधरशास्त्रिप्रणीतः अलिविलासिसंलापः, 18. श्रीशङ्करभगवत्पादविरचिता सौन्दर्यलहरी, 19. शिवमहिम्नस्तोत्रम्, 20. महिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम्, 21. पण्डितराजजगन्नाथस्य पञ्च लहर्यः गङ्गालहरी (पीयूषलहरी), अमृतलहरी, करुणालहरी (विष्णुलहरी), लक्ष्मीलहरी, सुधालहरी, 22. पण्डितराज-जगन्नाथविरचित-भामिनीविलासः, 23. शिवशतकम् एतेभ्यः ग्रन्थेभ्यः सर्वे श्लोकाः स्वीकर्तुं शक्यन्ते।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● पूर्ववर्तिना स्पर्धालुना पठितस्य श्लोकस्य तृतीयपादगतं प्रथमाक्षरं गृहीत्वा स्वस्वपर्याये स्पर्धालुः श्लोकं पठेत्। यथा- 'कश्चित् कान्ता.....' इति मेघदूतश्लोके पठिते सति क्रमागतपर्यायः स्पर्धी यकारेणारभ्यमाणं श्लोकं पठेत्। ● स्पर्धा परिसमापयितुम् उपलब्धसमयं, स्पर्धायाः गतिं च वीक्ष्य स्पर्धारम्भानन्तरं क्रमेण नियमाः निर्णायकैः परिशोधयिष्यन्ते। ● कस्मिंश्चिद्वर्षे राष्ट्रस्तरीयायाम् अक्षरश्लोक्यां स्वर्णपदकेन पुरस्कृतःपुनः अस्याम् अक्षरश्लोक्यां भागग्रहणाय नानुमन्यते। 	
--	--	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--

26	शास्त्रीयस्फूर्तिस्पर्धा	संस्कृतविश्वविद्यालयेषु/पारम्परिकसंस्कृतशिक्षण-संस्थासु शास्त्रिकक्षायां/ आचार्यकक्षायां/ विद्यावारिधिकक्षायां/तत्समकक्षायाम्/गुरुकुले वा अधीयानाः/कस्यचिद्विदुषः सन्निधौ स्वाध्यायशीलाः वा छात्राः। (गुरुकुले अधीयानानां/विद्वत्सन्निधौ स्वाध्यायरतानां वयोमितिः -01-01-2022 तमे दिनाङ्के 28 वर्षाणि अतीतानि न स्युः।) शास्त्रीयस्फूर्तिस्पर्धायां (QUIZ) प्रतिराज्यं द्वयोः एकः गणः भागं ग्रहीतुमर्हति। एतद्गणसदस्यौ इतरस्पर्धासु भागग्रहीतारौ, एतदर्थमेव चितौ वा भवितुमर्हतः। केवलशास्त्रसंबद्धाः विषयाः भवन्ति।	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रथमस्थानभाजे राष्ट्रस्तरीय-स्पर्धायां भागग्रहणाय अवसरः कल्प्यते। ● प्रथम-द्वितीय-तृतीय-स्थान-भाजां कृते प्रमाणपत्राणि। ● प्रमाणपत्राण्यतिरिच्य वस्तु-रूपेण/ग्रन्थरूपेण/धनराशि-रूपेण वा पुरस्काराः राज्य-स्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थाभिः उपलब्धानुदानराश्यानुसारेण प्रदीयन्ते।
----	---------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

* उपर्युक्तासु स्पर्धासु प्रत्येकं स्पर्धायां निर्णयकाले प्रथम-द्वितीय-तृतीयस्थानेषु प्रत्येकं स्थाने यदि द्वयोः स्पर्धाल्वोः बहूनां वा समाङ्काः आयान्ति तर्हि तयोः स्पर्धाल्वोः/तेषां स्पर्धालूनां समाङ्कभञ्जनाय पुनः स्पर्धा (आशुस्पर्धा) आयोज्येत।

* **आहत्य** प्रत्येकं संस्थायाः/प्रत्येकं गुरुकुलस्य (प्रति-स्पर्धालुगणं) **अष्टाविंशतिः स्पर्धालवः** (भाषणेषु प्रतिविषयम् एकैकः इति 10, शलाकासु प्रतिविषयम् एकैकः इति प्रकारेण-7, काव्यकण्ठपाठ-अष्टाध्यायीकण्ठपाठ-अमरकोषकण्ठपाठ-धातुरूपकण्ठपाठ-भगवद्गीताकण्ठपाठ-समस्या पूर्ति-अन्त्याक्षरी-स्पर्धासु एकैकः, शास्त्रार्थविचारे द्वौ स्फूर्तिस्पर्धायां द्वौ चेत्याहत्य 28) राज्यस्तरीयायां शास्त्रीयस्पर्धायां भागं ग्रहीतुमर्हन्ति।

* राज्यस्तरीयस्पर्धासु चिताः, **अखिलभारतीय(राष्ट्रस्तरीय)-शास्त्रीयस्पर्धायाः नियमावल्यां (पृ.सं. 2 तः 8) दर्शितरीत्या अर्हतावन्तः एव** अखिलभारतीयायां (राष्ट्रस्तरीयायां) स्पर्धायां भागं ग्रहीष्यन्ति।

राज्यस्तरीय-स्पर्धासु भागग्रहणाय नामाङ्कनार्थं प्रक्रिया

- उपरि निर्दिष्टासु राज्यस्तरीय-स्पर्धासु भागग्रहणचिकीर्षवः/स्पर्धार्थिनः तदर्थं स्वस्वसंस्थामाध्यमेन स्वगुरु- कुलमाध्यमेन स्वगुरोः माध्यमेन वा निर्दिष्टप्रपत्रं प्रपूर्य राज्यस्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थायै सम्प्रेष्य नामाङ्कनं कुर्युः।
- राज्यस्तरीयस्पर्धा कस्य राज्यस्य कुत्र भविष्यति? तदायोजकाः के? राज्यस्तरीयस्पर्धायै नामाङ्कनाय निर्दिष्टं प्रपत्रम् इत्यादि विवरणम् अग्रिमेषु पृष्ठेषु अवलोकनीयम्।

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली राज्यस्तरीय-शास्त्रीयस्पर्धायोजनस्थानानि/आयोजकसंस्थाः (2021-2022)		
क्र.सं	राज्यम्	राज्यस्तरीयस्पर्धायोजनस्थानम्/आयोजकसंस्था
1	जम्मू-काश्मीरम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, रणवीरपरिसरः, जम्मू कोट-भलवाल, जम्मू-181122 ☎ : 0191-2623090, E-mail-ranbirjmu@gmail.com
2	हिमाचलप्रदेशः	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, बलाहर, पोस्ट् बेग संख्या-1, देहरा, काँगड़ा-177101 ☎ : 01970-245409, E-mail-principal.garli@gmail.com
3	देहली	श्रीलालबहादुरशास्त्रि-राष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, बी-4, कुतुब-सांस्थानिक-क्षेत्रम्, कटवारिया सराय, नवदेहली 110016 ☎ : 011-46060606, फैक्स- 26533512, 26520255 Email- info@slbsrsv.ac.in
4	हरियाणा एवं पञ्जाबः	श्री दीवान-कृष्ण-किशोर-एस्. डी. आदर्श-संस्कृतमहाविद्यालयः, अम्बाला कैण्ट-133001, हरियाणा ☎ : 0171-2634283, Mob- 9896356235 Email- sdsanskritcollegeambala.webnod.com
5	उत्तराखण्डः	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, श्रीरघुनाथकीर्तिपरिसरः, देवप्रयागः पौडी गढ़वाल, उत्तराखण्डः - 249 301 ☎ : 09412949976 Email- raghunathkirticampus.rsks@gmail.com
6	उत्कलम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, सदाशिवपरिसरः, पुरी- 752 001 ☎ : 06752-223439, E-mail- principalpuri2009@gmail.com
7	बिहारम् एवं झारखण्डः	कामेश्वरसिंहदरभङ्गा-संस्कृतविश्वविद्यालयः
8	पश्चिमवङ्गः	श्री सीताराम-वैदिक-आदर्श-संस्कृतमहाविद्यालयः, 7/2 पी.डब्ल्यू.डी. रोड्, कोलकाता-700035 पश्चिम-बंगाल, ☎ 033-25777250, 25100850, Mob- 09883258920 E-mail- ssvasm@gmail.com
9	पूर्वोत्तरम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, एकलव्यपरिसरः, सिपाई पारा प्रो.-लेम्बुचेरा, जिला-पश्चिम त्रिपुरा, राज्य-त्रिपुरा - 799 210 ☎ 0381-2907855 E-mail- eklavayacampus.rsks@gmail.com
10	राजस्थानम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुरपरिसरः, त्रिवेणी-नगरम्, गोपालपुर-बाईपास, जयपुरम्-302018, ☎ : 0141-2760686, 2761115, 2761236 E-mail-principaljp.in@gmail.com

11	उत्तरप्रदेशः	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, लखनऊपरिसरः, विशाल-खण्डः 4, गोमती-नगरम्, लखनऊ-226010 ☎ : 0522-2393748, E-mail-rskslucknow@yahoo.com
12	मध्यप्रदेशः एवं छत्तीसगढम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः, संस्कृतमार्गः भागसेवनिया, भोपाल-462043 ☎ : 0755-2418043, E-mail-rsks_bhopal@yahoo.com
13	गुजरात्	'दर्शनम्' संस्कृतमहाविद्यालयः, श्री स्वामिनारायण-गुरुकुल-विश्वविद्याप्रतिष्ठानम्, एस्.जी.वी.पी. वृत्तम्, एस्.जि-राजमार्गः, छारोडी, अहमदाबाद्-382481 ☎ 02717-242141 तः 3 फेक्स-242083, E-mail-dsm@yahoo.in
14	महाराष्ट्रम् एवं गोवा	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, क.जे. सोमैयापरिसरः, एस्.आई.एम्.एस्.आर्. भवनम्, विद्याविहारः, मुम्बई-400077 ☎ : 022-21025452, E-mail-rsksmumbai@yahoo.com
15	आन्ध्रप्रदेशः एवं तेलंगाना	राष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपति, आ.प्र.-517507 0877-2287649,2286600 Email- registrar_rsvp@yahoo.co.in
16	तमिलनाडु एवं पाण्डिचेरी	मद्रपुरीसंस्कृतमहाविद्यालयः (मद्रास-संस्कृत-कालेज एवं एस्.एस्.वी-पाठशाला) 84, रोय् पेट, हाई-रोड्, मैलापुरम्, चेन्नै - 600004, ☎ 044-24980421 Email- mds.sanskritcollege@gmail.com
17	केरलम्	केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गुरुवायूरपरिसरः, पो०पुरनाटुक्करा, त्रिचूर-680551 ☎ 0487-2307608, E-mail-rss.guruvayoor@gmail.com
18	कर्णाटकम्	कर्णाटसंस्कृतविश्वविद्यालयः, श्रीचामराजेन्द्र-संस्कृतमहाविद्यालयपरिसरः पम्पमहाकविमार्गः, चामराज-पेटे बेङ्गलूरु-560018 ☎ 080-26705596, 26701303 Email- karnatakasanskrituniversity@gmail.com

सूचना- या आयोजकसंस्था द्वयोः राज्ययोः/अनेकेषां राज्यानां स्पर्धिनां कृते राज्यस्तरीयस्पर्धाम् आयोजयति सा प्रत्येकं राज्यस्य पृथक्-पृथक् अर्हस्पर्धिगणं राष्ट्रस्तरीयस्पर्धायै निश्चिनुयात् (न तु साकल्येन)।

प्रमुखाः संभाविततिथयः-

- ☛ शलाकापरीक्षा-कण्ठपाठादीनां विषयघोषणा } 28.02.2020
(59तम्याः अ.भा.शा. स्पर्धायाः सम्पूर्तिस्तरे उद्घोषणा कृता
विश्वविद्यालयस्य जालपुटे संस्थापिता)
- ☛ राज्यस्तरीयस्पर्धार्थं } 02.03.2022 तः
नामाङ्कनाय कालः
- ☛ राज्यस्तरीयस्पर्धायाः } 2022 वर्षस्य मार्च 02 दिनाङ्कतः
आयोजनम् विविधराज्येषु } मार्च 12 दिनाङ्कतः प्राक्

राज्यस्तरीयस्पर्धायोजनदिनाङ्काः तत्तद्राज्यस्तरीयस्पर्धायोजकैः निर्णेष्यन्ते। अतः तद्विषये अधिकं विवरणं राज्यस्तरीय- स्पर्धायोजकानां सकाशात् प्राप्तव्यम्। याभिः संस्थाभिः/गुरुकुलैः स्पर्धालूनां नामाङ्कनं कारितं ताभ्यः संस्थाभ्यः/गुरुकुलेभ्यः राज्यस्तरीयस्पर्धायोजकैः अपेक्षितसूचनाः प्रेषयिष्यन्ते।

- ☛ अखिलभारतीयशास्त्रीयस्पर्धायाः आयोजनम्- 2022 मार्च अंतिमसप्ताहः

कर्णाटकसंस्कृतविश्वविद्यालयः, बैंगलूरु (संभावितः)

सम्पर्कसूत्रम्

राज्यस्तरीयस्पर्धायोजनविषये जिज्ञासितं ज्ञातुं तत्तद्राज्यस्तरीयस्पर्धायोजकसंस्थानां/ विश्वविद्यालयपरिसराणां सम्पर्कः कर्तुं शक्यते। (तेषां दूरवाणीसंख्यासहितसङ्केतसूची एतस्याः पुस्तिकायाः 20-21 पृष्ठयोः विद्यते।) तदतिरिच्य, अखिलभारतीयशास्त्रीयस्पर्धासम्बन्धिविवरणं प्राप्तुं सङ्केतः -

संयोजकः,	अखिलभारतीयशास्त्रीयस्पर्धा केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः 56,57 इन्स्टीट्यूशनल्-एरिया, जनकपुरी, नवदेहली - 110 058 मो. 09805072827 E-mail : madhumbhat1982@gmail.com
----------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------